International Journal of History 2020; 2(2): 146-148

INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 146-148
Received: 20-06-2020
Accepted: 23-07-2020

डॉ. निशा झा
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास–विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. निशा झा
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास–विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

राहुल सांकृत्यायन की साहित्य संबंधी विचारधारा

डॉ. निशा झा

सारांश
राहुल सांकृत्यायन के साहित्य चिन्तन में प्रगतिवादी विचारधारा एवं बौद्ध दर्शन का प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। दर्शन में जिसे मार्क्सवाद कहा जाता है, उसी प्रकार साहित्य में उसे प्रगतिवाद कहते हैं। चूँकि राहुल सांकृत्यायन पर मार्क्सवादी दर्शन का भी प्रभाव था, इसी कारण उनके साहित्य चिन्तन में प्रगतिवादी एक प्रेरक तत्व के रूप में है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित 'प्रगतिशीलता का प्रश्न', 'प्रगतिशील लेखक' एवं 'आज का साहित्यकार' आदि लेखों में जहाँ एक ओर उनकी प्रगतिवादी विचारधारा परिलक्षित होती है तो दूसरी ओर कई स्थानों पर वे एक समीक्षक के रूप में भी नजर आते हैं।

मुख्य शब्दः राहुल सांकृत्यायन, विचारधारा

प्रस्तावना

प्रगतिवाद कोई कल्ट या संकीर्ण सम्प्रदाय नहीं हैं प्रगतिवाद का काम है प्रगति के रूधे रास्ते को खोलना, उसके पथ को प्रशस्त करना। प्रगतिवाद कलाकार की स्वतंत्रता का नहीं परतंत्रता का शत्रु है। प्रगति जिसके रोम–रोम में भींग गई है, प्रगति ही जिसकी प्रकृति बन गई है, वह स्वयं अपनी सीमाओं का निर्धारण कर सकता है। सच कहा जाये तो यही मूल मंत्र राहुल सांकृत्यायन के साहित्य संबंधी विचारों का पूर्णतरू प्रतिनिधित्व करता है। राहुलजी के हृदय में प्राचीन स्वर्णिम–साहित्य के प्रति आस्था थी, गर्व था, और उसी से प्रेरणा प्राप्त करते हुए वे वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में नवीनता के समर्थक थे। उन्होंने लिखा भी है– ''किसी भी भाषा साहित्य के लिए उसकी भूतकाल की कृतियाँ, चाहे वे कितनी ही भव्य और महत्वपूर्ण हों, पर्याप्त नहीं होती। इसके लिए हमें वर्तमान और भविष्य की ओर भी ध्यान देना होगा। [1]

राहुल सांकृत्यायन की दृष्टि में प्रगतिशील लेखक जन कल्याण का समर्थक है। [2] वे प्रगतिशीलता को जीवन के प्रत्येक अंग से संबंधित मानते हैं। [3] इतना ही नहीं प्रगतिशील साहित्य के लक्ष्य के विषय में भी अपने विचार व्यक्त करते हुए राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है– ''प्रगतिशील साहित्य या लेखक को समझने की सबसे बड़ी बात यह होनी चाहिए कि वह दुनिया की व्याख्या करने के लिए नहीं आया है, और न उसके लिए दो चार आँस बहा देने या दो चार ठहाके लगा देने से ही उसका फर्ज पूरा हो जाता है।... हमने संसार को जैसा पाया उससे बेहतर अवस्था में आने वालों के हाथ में देना है। [4] राहुल सांकृत्यायन प्रगतिशील साहित्यकार को जनवादी कलाकार मानते हैं। उनके अनुसार प्रगति का स्रोत लेखक का मस्तिष्क न होकर साधारण जनता है। [5] साहित्यिक प्रगतिशीलता की सीमाओं के बारे में राहुलजी का विचार है– ''साहित्य में प्रगतिशीलता हमसे मांग करती है, कि जितनी ही विस्तृत हो उतनी ही गहरी भी हो, जितनी ही देश में फैली है, उतनी ही एक–एक व्यक्ति के पास पहुँची भी हो। इसके लिए मातृभाषाओं के द्वारा शीघ्र से शीघ्र सारी जनता को साक्षर और शिक्षित, कला–साहित्य पारखी बनाने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं।'' [6]

इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन की न केवल प्रगतिशील साहित्य अपितु प्रगतिशील साहित्यकार से भी काफी अपेक्षाएँ हैं। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार आज के प्रगतिशील साहित्यकार को जन साहित्यकार बनना है, उसे जन मन का रंजन करना है, जन–मन में शक्ति और स्फूर्ति पैदा करनी है, उसे पलायन के स्थान पर संघर्ष का संदेश देना है, उसे दुनिया को बदलना है। [7] राहुल सांकृत्यायन के अनुसार जनता और लेखक के बीच अविच्छिन्न संबंध है– ''साहित्यकार जनता का जबर्दस्त साथी, साथ ही साथ उसका अगुआ भी है। यह सिपाही और सिपहसालार भी है। लेकिन आज का सिपहसलार, आज का अगुआ तभी अपने कर्तव्य को ठीक तरह से पूरा कर सकता है, यदि। वह जनता से अभिन्नता स्थापित करे।'' [8]

राहुल सांकृत्यायन ने साहित्य की गतिविधियों के निरीक्षण के साथ–साथ साहित्याकर एवं समालोचक के दायित्व पर भी विचार व्यक्त किए। हैं। उनके अनुसार आज का साहित्यकार एकांगी आलोचना

करता है, उसका कर्तव्य केवल दोष दिखलाना नहीं है, वरन् गुणों की ओर भी ध्यान देना है। इसलिए समालोचक को अतिचार एवं एकांगी पथ का परित्याग कर यथार्थता को प्रस्तुत करना चाहिए। [9] इसके साथ ही समालोचक का दृष्टिकोण संकीर्ण सैद्धांतिक मतवाद एवं पूर्वाग्रह से ग्रसित न होकर निष्पक्ष एवं उदार होना चाहिए। राहुलजी जिस समय साहित्य का सृजन कर रहे थे, उस समय छायावाद के प्रति लोगों के मन में अनेक प्रकार की दुश्चिंताएँ घर कर रही थीं। ऐसे समय में राहुल सांकृत्यायन ने रीतिकालीन काव्य की तुलना में छायावादी काव्य को श्रेष्ठतर माना। दोनों का तुलनात्मक एवं सटीक मूल्यांकन करते हुए राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है– ''गत अर्द्ध शताब्दी (बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध के समीप का काल) हिन्दी कविता के लिए हेमन्त काल था। नायक–नायिकाओं की रीतियों के गोरखधंधे द्वारा सम्मोहित लोग भले ही तारीफ के पुल बांधते हों, किन्तु इस काल में मस्तिष्क को उद्भाषित और हृदय को द्रवित कर देने वाली उक्त कविताओं का अभाव ही रहा है। इस निराशामयी स्थिति में भी आशा की झलक आने लगी है, और यह झलक मुझे तो उस कविता द्वारा आती मालूम होती है, जिसे लोग निन्दा अथवा प्रशंसा के भाव से छायावाद कहते हैं। इस छायावाद की परिभाषा दूसरे चाहे कुछ भी करते हों, मैं तो समझता हूँ पुरानी रूढ़ियों और नाना भांति की जकड़बन्दियों के प्रति विद्रोह का झंडा उठाना, इसी में, मैं आशामय भविष्य की आभा पाता हूँ।'' [10] राहुल सांकृत्यायन के उक्त विचारों से उनकी विचारगत प्रगतिशीलता की छाप स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है, जो कि छायावाद के सही निर्धारण की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

राहुल सांकृत्यायन का तिब्बत अनुसंधान न केवल भारतीय बौद्ध धर्म के इतिहास के लिए ही हितकर रहा, अपितु हिन्दी साहित्य के काल निर्धारण की दिशा में भी अभूतपूर्व साबित हुआ। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, तथा डॉ. धीरेन्द्र वर्मा आदि साहित्यकार हिन्दी साहित्य का आरम्भ 10वीं–11वीं शताब्दी (सन् 1050 ई०) से मानते थे। [11] तथा इस आरम्भिक काल को उन्होंने वीरगाथा काल की संज्ञा दी। [12] राहुलजी ने तिब्बत की यात्रा के दौरान अनेक पाण्डुलिपियों का उद्धार किया था जिसमें दर्शन, धर्म तथा साहित्य की अनेक रचनाएँ उन्हें प्राप्त हुई। इसी समय राहुल सांकृत्यायन को तिब्बत के साक्य विहार से चौरासी सिद्धों की वंशावली प्राप्त हुई। [13] राहुल सांकृत्यायन ने इन चौरासी सिद्धों का काल 800–1175 ई. माना है। [14] तथा आदि सिद्ध सरहपाद को उन्होंने आदि कवि माना है। [15] आदि कवि सरहपाद का काल उन्होंने 750 ई. को निर्धारित किया है। [16] इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी साहित्य के आदि काल की परिधि को 10वीं–11वीं शताब्दी से बढ़ाकर 8वीं शताब्दी तक पहुँचाया। [17] हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इस महत्वूपर्ण क्रांति ने सिद्धों के साहित्य को हिन्दी का आदि साहित्य प्रमाणित किया। राहुल सांकृत्यायन के इस काल निर्धारण में उनकी सूक्ष्म अन्वेषण प्रतिभा एवं अध्ययन वृत्ति दृष्टिगोचर होती है।

राहुल सांकृत्यायन की ही तरह ग्रियर्सन महोदय, मिश्र बन्धु, गुलेरी जी एवं काशी प्रसाद जायसवाल आदि ने भी हिन्दी साहित्य के आरम्भ का काल 7वीं–8वीं सदी को ही हिन्दी का भी उद्भव काल मानते हैं। लेकिन इन सभी में इस बात को लेकर मतभेद की स्थिति थी कि अपभ्रंश और हिन्दी में क्या सम्बन्ध है? अपभ्रंश स्वतंत्र भाष है अथवा पुरानी हिन्दी या हिन्दी? [18] ऐसे में राहुल सांकृत्यायन ने समस्त मतभेदों को व्यर्थ मानते हुए लिखा है– ''अपभ्रंश और हिन्दी में मूलतः कोई भेद नहीं है। दोनों एक ही भाषायें है। अपभ्रंश और आज की हिन्दी (खड़ी बोली, ब्रजी, अवधी) में अन्तर इतना ही है कि एक में शुद्ध संस्कृत तत्सम् शब्दों का प्रयोग बिलकुल वर्जित है, जबकि आज की साहित्यक भाषा में मुश्किल से तद्भव शब्दों का प्रयोग होता है।'' [19] वासुदेव सिंह आदि साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन की इसी मान्यता को सही मानते हैं। [20]

ऐतिहासिक साहित्य एवं ऐतिहासिक साहित्यकार के बारे में भी राहुलजी ने सारगर्भित विचार व्यक्त किए हैं। राहुल सांकृत्यायन प्राचीन इतिहास को आधुनिक विकास के सन्दर्भ में देखते हैं। उनके अनुसार अतीत का ही उज्ज्वल होना हमारे लिए पर्याप्त नहीं वरन् उसकी उपयोगिता एवं सार्थकता वर्तमान को ज्वलन्त बनाने में प्रेरणा प्रदान करना है। [21] अपनी इसी विचारधारा के चलते उनका मानना था कि प्राचीन प्रजातंत्रों का इतिहास, वर्तमान भारत के गौरवपूर्ण भविष्य में एक ऐतिहासिक साहित्यकार का दायित्व अधिक होता है, क्योंकि उसकी प्रत्येक पंक्ति पर 'निष्ठुर मर्मज्ञ समूह' पैनी दृष्टि से देख रहा होता है, अन्यथा अनौचित्यपूर्ण तथ्यों से उसकी कला उपहासास्पद हो सकती है। [22] राहुलजी ऐतिहासिक साहित्य रचना में देश–काल के अभ्यांतरिक एवं बाह्य रूपों के प्रति विस्तृत ज्ञान की कमी को अक्षम्य मानते हैं। क्योंकि देश की तरह, काल–भेद से ही हमारी वेशभूषा, खान–पान और बहुत से सामाजिक और राजनीतिक व्यवहारों में अन्तर पड़ जाता है, इस प्रकार की त्रुटि ऐतिहासिक साहित्यकार के अन्य सभी गणों का गौरवहीन कर देती है। [23]

हिन्दी साहित्यकारों में राहुल सांकृत्यायन, मुंशी प्रेमचंद के काफी प्रशंसक थे, उन्होंने प्रेमचन्द को भारत का अमर लेखक एवं कलाकार की संज्ञा देते हुए लिखा है– ''उन्होंने (मुंशी प्रेचन्द) साहित्यिक मनोरंजन और उच्च आदर्शों के लिए अन्तरूप्रेरणा का ही सफल प्रयास नहीं किया, बल्कि उनकी लेखनी द्वारा 20वीं शताब्दी की साढ़े तीन दशाब्दियों के लोक जीवन का स्वरूप, लोक इतिहास बड़ी स्पष्टता और ईमानदारी के साथ चित्रित हुआ है प्रेमचन्द्र का विश्व के साहित्याकरों में क्या स्थान होगा, इसका अनुमान आप इसी से कर सकते हैं कि रूस के प्रसिद्ध लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में हर साल प्रेमचन्द्र–दिवस मनाया जाता है, उनके 'गोदान; को सुन्दर कृति समझकर रूसी भाषा में अनुवाद किया गया है।'' [24] दूसरे साहित्यकार जिनसे राहुलजी प्रभावित थे, वे थे 'भारतेन्दु हरिश्चन्द', जिन्हें, उन्होंने आधुनिक साहित्य का 'सूर्य' कहा है। राहुलजी ने उनकी तुलना रूसी लेखक पुश्किन से की है, जिसे रूसी साहित्य का 'सूर्य' कहा जाता है। अपने इस तुलनात्मक अध्ययन 'भारतेन्दु और पुश्किन' में राहुल सांकृत्यायन विस्तारपूर्वक बतलाते हैं कि विश्व के दो महान् रचनाकारों की मानसिकता में कितनी समानता है। [25]

राहुल सांकृत्यायन अपने साहित्य चिन्तन में विज्ञान के महत्व को भी स्वीकार करते हैं, इसीलिए उनका प्रगतिवादी चिंतन भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिभूत है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार वैज्ञानिक दृष्टि से हमारा हिन्दी साहित्य पिछड़ा हुआ है। आधुनिक जगत में विज्ञान के महत्व को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि वह जीवन के प्रत्येक अंग को नवीन ढंग से विकसित कर रहा है। अतः राहुल सांकृत्यायन का विचार था कि– 'हिन्दी कस भण्डार विज्ञान से अपूर्ण रहे, यह हमारे लिए श्रेयस्कर और उचित नहीं है', इसलिए हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए। [26]

राहुल सांकृत्यायन स्वयं लेखक थे और उन्होंने विभिन्न पत्रों, पत्रिकाओं आदि में लेख भी लिखे थे और कुछ का तो सम्पादन भी किया था। अतः उन्होंने पत्रकार एवं साहित्यकारों की सामान्य समस्याओं की ओर भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। प्रगतिशील लेखन के विकास के लिए राहुलजी लेखक–संगठन के पक्षपाती थी। उनके अनुसार एक साहित्य संगठन की स्थापना की जानी चाहिएय जिसका कार्य प्रकाशकों की महत्ता को सन्तुलित रखना होगा। [27] राहुल सांकृत्यायन की उपर्युक्त विवेच्य साहित्य संबंधी विचारधरा से स्पष्ट है कि उनकी यह विचारधारा प्रगतिशीलता की पक्षधर है और उन्हें अपने समय की साहित्यिक समस्याओं एवं तत्युगीन लेखन से गहरा सरोकार रहा है। चूंकि राहुल सांकृत्यायन ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अध्येता एवं चिंतक थे, अतः उनके इस पक्ष का प्रभाव भी उनकी साहित्य संबंधी विचारधारा पर दृष्टिगोचर होता है। और वे एक निष्पक्ष समालोचक एवं प्रगतिशील विचारक के रूप में हमारे सामने आते हैं।

संदर्भ

1. राहुल सांकृत्यायन, साहित्य निबंधावली, इलाहाबाद, 1961, पृ. – 2
2. वही, पृ.– 129
3. राहुल सांकृत्यायन, आज की समस्याएँ, इलाहाबाद, 1945, पृ. – 44
4. वही, पृ.– 48
5. वही, पृ.– 51
6. वही, पृ.– 53
7. वही, पृ.– 61
8. वही, पृ.– 61
9. राहुल सांकृत्यायन, साहित्य निबंधावली, इलाहाबाद, 1961, पृ. – 165–66
10. वही, पृ.– 3
11. वासुदेव सिंह, 'हिन्दी साहित्येतिहासके क्षेत्र में श्री राहुल सांकृत्यायन का अवदान', सम्मेलन पत्रिका, भाग– 76, संख्या– 3–4, पृ.– 21–22
12. नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, 'हिन्दी साहित्य और महापंडित', वसुधा, पृ.– 115
13. राहुल सांकृत्यायन, पुरातत्व निबंधावली, प्रयाग, 1937, पृ.– 146
14. वही, पृ.– 161
15. वही, पृ.– 160
16. राहुल सांकृत्यायन, साहित्य निबंधावली, इलाहाबाद, 1961, पृ. – 1
17. राहुल सांकृत्यायन, हिन्दी काव्यधारा, इलाहाबाद, 1945, भूमिका
18. वासुदेव सिंह, 'हिन्दी साहित्येतिहास के क्षेत्र में श्री राहुल सांकृत्यायन का अवदान', सम्मेलन पत्रिका, भाग– 76, पृ.– 22
19. राहुल सांकृत्यायन, हिन्दी काव्यधारा, इलाहाबाद, 1945, पृ.– 11
20. वासुदेव सिंह, 'हिन्दी साहित्येतिहासके क्षेत्र में श्री राहुल सांकृत्यायन का अवदान', सम्मेलन पत्रिका, भाग– 76, संख्या– 3–4, पृ.– 22
21. राहुल सांकृत्यायन, साहित्य निबंधावली, इलाहाबाद, 1961, पृ. – 207
22. राहुल सांकृत्यायन, 'ऐतिहासिक उपन्यास', आलोचना, उपन्यास विशेषांक, अंक– 13, अक्टूबर, 1954, पृ.– 171
23. राहुल सांकृत्यायन, साहित्य निबंधावली, इलाहाबाद, 1961, पृ. – 24
24. राहुल सांकृत्यायन, 'प्रेमचन्द स्मृति', राहुल वाङ्गमय, दिल्ली, 1994, पृ.– 593
25. राहुल सांकृत्यायन, 'भारतेन्दु की पुश्किलन', राहुल वङ्गमय, दिल्ली, 1994, पृ.– 578–81
26. राहुल सांकृत्यायन, साहित्य निबंधावली, इलाहाबाद, 1961, पृ. – 26–27
27. वही, पृ.– 168